B.A. (Hons) Part III
Philosophy Paper - VII
Topic Determination of Truth Function Proposition. (सत्य क्रियात्मक तर्कवाक्य का निर्धारण)

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

तर्कशास्त्र में तर्कवाक्य के पाँच रूप निम्नलिखित होते हैं।

1. संयोजन (Conjunction)
2. वियोजन (Disjunction)
3. समानता (Equivalence)
4. आपादान (Implication)
5. निषेध (Negation)

उपरोक्त रूपो के प्रतीक इस प्रकार हैं।

1. संयोजन प . फ
2. वियोजन प V फ
3. समानता प ∧ फ अथवा प V फ
4. आपादान प ⊃ फ
5. ~~निषे~~ निषेध ~ प

1. संयोजन :- सरल वाक्यों को मिश्रित वाक्य में परिवर्तन करने की क्रिया को संयोजन कहलाता है। उदाहरण - गुलाब लाल होता है और गेंदा पीला होता है।

(2) वियोजन :- दो या दो से अधिक सरल वाक्यो को 'या' अथवा द्वारा मिश्रित वाक्य बनाने से वह परिणामी तर्कवाक्य में परिवर्तित हो जाता है उसे वियोजन कहते है। उदाहरण - राम या श्याम तुमको बाजार मे मिलेगें। 'या' शब्द के दो अर्थ होते है (i) समावेशक (ii) व्यावर्तक। जब वाक्य में 'या' शब्द दोनों स्थितियों में किसी बात को लागू करता है तो 'या' शब्द के इस अर्थ को समावेशक कहते हैं। व्यावर्तक 'या' शब्द का द्वितीय अर्थ है। इसप्रकार के वाक्यों में से एक वाक्य के सत्य होने पर दूसरा वाक्य स्वतः ही असत्य हो जाता है क्योंकि दोनों वाक्य सत्य अथवा असत्य एक साथ ही नहीं हो सकते हैं।

(3) समानता :- ऐसे मिश्रित तर्कवाक्य जिनमें निहित दोनों सरल वाक्यों में समानता पाई जाती है उसे समानता का संबन्ध कहते हैं। समानता के संबन्ध में दोनों वाक्य एक साथ सत्य अथवा असत्य हो सकते है। ऐसे संबन्ध जिनमें समामित एवं संचारिता का गुण निहित होता है इनमें समानता का गुण पाया जाता है। जैसे - सभी मनुष्य मरणशील है।

राम एक मनुष्य है।

∴ राम मरणशील है।

समानता के संबन्ध में तीन गुण पाये जाते है। सममिति, संचारिता और स्ववाचकता।

जब किसी मिश्रित तर्कवाक्य में एक ही वस्तु से संबंध नामों का उल्लेख किया जाता है तो दोनों वस्तुओं के मध्य पाये जाने संबंध को सममिति कहा जाता है। जब किसी वाक्य के दो पदों में से द्वितीय पद का संबंध तृतीय पद से जोड़कर तृतीय का प्रथम से संबंध जोड़ा जाता है तो उस संबंध में संचारिता का गुण पाया जाता है। ऐसा तर्कवाक्य जिसमें विधेय द्वारा उद्देश्य के संबंध में कुछ कहने पर ही दोनों के बीच संबंध स्थापित होता है इसलिए उसमें स्वयंवाचकता का गुण निहित होता है।

④ आपादान :- आपादान का प्रयोग ऐसे मिश्रित तर्कवाक्यों ~~के संबंध~~ में संबंध स्थापित करने हेतु किया जाता है जिसमें एक वाक्य के सत्य होने से दूसरा वाक्य स्वतः सत्य हो जाता है। जैसे- यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण होगे। आपादान संबंध विभिन्न प्रकार के होते हैं—

ⓐ तार्किक आपादान — जब किसी तर्कवाक्य के अन्तर्गत आपादी एवं आपाद्य के मध्य संबंध को तर्क के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है ~~तब~~ तब उस संबंध को तार्किक आपादान संबंध कहते हैं।

ⓑ ~~निर्णयात्मक~~ निर्णयात्मक आपादान :- ऐसे मिश्रित तर्कवाक्य जिसमें आपादी का आपाद्य से निर्णयात्मक आपादान होता है, निर्णयात्मक आपादान संबंध कहलाता है।

(स) परिभाषात्मक आपादान :- जब मिश्रित तर्कवाक्य मे आपादी एवं आपाद्य के मध्य संबंध परिभाषात्मक होता है तब वह परिभाषात्मक आपादान कहलाता है।

(द) कार्यकारणात्मक आपादान :- आपादी एव आपाद्य के मध्य कार्य-कारणात्मक संबंध पाये जाने वाले तर्कवाक्यो मे यह आपादान पाया जाता है।

(5) निषेध :— ऐसे तर्कवाक्य जो मिश्रित होते है लेकिन उनमे एक वाक्य इकाई वाक्य का निषेध करता है। जैसे — यह सत्य नही है कि रूस भारत से अधिक समृद्ध है।

उपरोक्त उदाहरण मे एक सरल वाक्य है जो इकाई वाक्य का निषेध कर रहा है इसलिए इसे निषेधात्मक निषेध संबंधात्मक कहा जाता है।